महेन्द्र नारायण राम

जन्म: 29.01.1958

जन्म सथान: खुटौना, मधुबनी (बिहार)

वृत्ति- पूर्व अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना, सदस्य, मैथिली सलाहकार समिति, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, दीपायतन, पटना, विश्वयुवक केन्द्र, नई दिल्ली, प्रियाल, कपार्ट, ऐक्शन-एड, एस.आर.सी., ऑक्सफेम इण्डिया ट्रस्ट, निपसीड आदि।

सम्प्रति : शिक्षा उपाधीक्षक, दरभंगा।

कृति : गहबर (कथा संग्रह), जागि गेल छी (कविता संग्रह), मैथिली लोकगाथा : कारिख पजियार, मैथिली लोकवृत्त : बिन्दु ओ विस्तार (शोध समीक्षा), कारिख लोकगाथा, सलहेस लोकगाथा, दीनाभद्री लोकगाथा, भाओ-भगैत-गहबर गीत (मूल संग्रह) तथा पंचलोकदेवता रमण जी : ग्रामसभा से विधान सभा तक (हिन्दी)।

सम्मान : विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा साहित्यकार संसद, समस्तीपुर, राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, सर्वमंगला विद्यापीठ, सिमरियाघाट, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, लोक साहित्य मंच, पटना, मिथिलायतन, रायपुर, (छत्तीसगढ़) भारतीय साहित्य जागरण परिषद्, बाबूबरही तथा राष्ट्रीय साहित्य परिषद्, दलसिंहसराय द्वारा।

□□□

मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे सामाजिक समरसता

'जन' शब्दक अनेक अर्थ होइत अछि। मुदा मुख्य अर्थ अछि समाजमे रहऽवला 'सामान्य लोक'। सामान्य लोकसँ अभिप्राय अछि एहन लोक जे कोनो गाम अथवा शहरक सुसंस्कृत, परिष्कृत अथवा रुचि सम्पन्न लोकक अपेक्षा बेसी सरल एवं सहज जीवन बितबैत अछि। एहि समूहक लोक सामाजिक, आर्थिक रूपेँ उपेक्षित रहैत अछि। एहि वर्गकेँ दलित, शोषित, पीड़ित अथवा पिछड़लक संज्ञासँ अभिहित कयल जाइत अछि।

लोकसंस्कृतिक मूलमे इएह 'जन' शब्द अन्तर्निहित अछि। एहिमे जन-समूहक आत्माक संग तादात्मय स्थापित रहैछ। ओकर रहन-सहन, आहार-व्यवहार, सुख-दुःख, सौख-सेहंता, ओकर नीक-बेजायक क्रिया-कलाप, उत्थान-पतन आदिक नोटिस लेब अनिवार्य मानल जाइत अछि।

'संस्कृति' शब्दक अर्थ होइछ-सम्यक कृति। संस्कार आ संस्करणक भावार्थ सेहो संस्कृतिक अन्तर्गत आबि जाइछ। सभ्यता आ संस्कृति दू मूल वस्तुक अन्तरमे जँ सभ्यता मानव शरीर अछि तँ संस्कृति अन्तःकरण। संस्कृति अपनाकेँ सभ्यता द्वारा व्यक्त करैछ तऽ संस्कृतिओ साँच अछि, जाहिमे समाजक विचार ढलैत अछि एवं ओकर अनुकरकण कऽ आगू बढ़ैत अछि। अर्थात सभ्यकृति केवल मानवीकृति भऽ सकैत अछि। ओ एक सांस्कृतिक स्वरूप बनैत अछि। मनुष्यक भाव, विचार, धारणाक संगठन होइत अछि। संस्कृति अपनामे बहुत व्यापक आ गंभीर अर्थ बोध करबैछ।

लोक आ संस्कृति दुनू व्यापक संज्ञा थिक। एकरा विखंडित कऽ कऽ नहि देखल जा सकैत अछि। लोक समूचा जीव, प्रकृति, जीवन, स्वर्ग-नरक, कल्पना यथार्थक नाम अछि। लोक सृष्टिक अन्दर आ बाहर पसरल अछि। लोक सभठाम अछि। मिथिलामे तऽ लोक शब्द सगा-सम्बन्धी अपन-परोड़सँ लऽ कऽ घरनी धरिक लेल प्रयुक्त होमऽ लागल अछि। कहबाक अभिप्राय अछि जे लोकसंस्कृति ओ संस्कृति थिक जकर स्वाद सुच्चा प्रयुक्त होमऽ लागल अछि।

कहबाक अभिप्राय अछि जे लोकसंस्कृति ओ संस्कृति थिक जकर स्वाद सुच्चा ग्रामीण गमइक प्राकृतिक कोरामे हमरा भेटैत अछि। जकर आनन्द शुद्धताक संग प्राप्त होइत अछि। हम अपन प्राकृतिक आत्मानुभव करैत छी। सङहि

इहो विचारणीय जे मिथिला भारतक एक अतिप्राचीन, सुसभ्य एवं सुसंस्कृत क्षेत्र रहल अछि। एकर भौगोलिक स्थिति जतऽ एकरा अतिमहत्वपूर्ण बनबैत छैक, ओतऽ हम देखैत छी जे समुन्नत सांस्कृतिक परिवेश एकरा उत्तराधिकारमे भेटल छैक। एक दिससँ मिथिलाक प्राकृतिक सौन्दर्य एवं वैदिक परम्परा जतऽ मिथिलाक प्रबुद्ध वर्गकेँ आध्यात्मिक एवं परिमार्जित चिन्तन दिस प्रेरित कयलक तऽ ओतऽ ओ जन साधारण (लोक)केँ सहो लोक-कल्याण हेतु अपन डेग बढ़ेबाक लेल बाध्य कयलक। एक दिस जखन मिथिलाक प्रबुद्ध वर्ग न्याय, दर्शन, व्याकरण आ परिमार्जित साहित्यिक रचनामे लागल छलाह जऽ ओहि कालखंडमे सामान्य जन-जीवन सेहो मिथिलाक जन-सामान्यक प्रति प्रबुद्ध वर्गक नकारात्मक दृष्टिकोणसँ आहत भऽ अपना लेल किछु रचबाक, करबाक ओ आगू बढ़बाक लेल बाध्य भेलाह। अर्थ स्पष्ट अछि जे प्रबुद्ध वर्गक न्याय, दर्शन, व्याकरण ओ सर्जनमे जटिलता अलंकारयुक्त कलात्मक आ पांडित्यपूर्ण हेबाक कारणेँ जनसामान्य पहुँचसँ दूर भऽ जाइत गेल तऽ ओतहि समाजक निम्न स्तर (लोक) परक सर्जनमे आडबंरहीनता, सम्प्रेषणीयता, रसात्मक ओ हृदयगाही बनेबाक तत्व विद्यमान रहल। इएह आग्रह कारण भेल जे अशिक्षित, अल्पशिक्षित वर्गक संवेदनशील इकाई द्वारा कृत्य कयल गेल जकरा मिथिलाक सम्पूर्ण वर्ग स्वीकार कयलक, प्रशंसा कयलक एवं आत्मसात कयलक, किएक तऽ एहि कृत्यमे मनुष्यक दैहिक, दैविक एवं भौतिक क्रिया-कलापक संगे सम्पर्क स्थापित करबाक सार्थक प्रयास कयल गेल। इएह मिथिलाक मूल संस्कृति लोक-संस्कृतिसँ अभिहित कयल गेल। एहिमे जतऽ जादू-टोना, तंत्र-मंत्रक स्थान भेटल अछि ओतहि मनुष्य मात्रक दैहिक क्रिया-कलापेँ ध्यानमे राखि ओकर विभिन्न आवश्यकता, इच्छा हर्ष-विषाद, प्रेम-विरह, घृणा, पारिवारिक सम्बन्ध, विश्वास, भक्ति भावना, शौर्य-पराक्रम, सामाजिक सम्बन्ध आदि सभ विषयकेँ स्थान एहि संस्कृत मध्य सुरक्षित पाओल जाइछ।

कनेको सन्देह नहि जे मिथिलाक लोकसंस्कृति मिथिलाक गाम-गमइक ओ संस्कृति अद्यपर्यन्त सुरक्षित अछि। एहिमे समाजक जनजीवन सभ अर्थ समाहित अछि। एहि संस्कृति मध्य कोनो खाधि नहि अछि। कोनो आड़ि नहि अछि। कोनो वर्ग नहि अछि। कोनो जाति-धर्म नहि अछि। जन-जीवन तऽ ओहि संस्कृतिमे बसैत अछि, ओंघराइत अछि, पलैत आ बढ़ैत अछि। मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे जतेक कोनो तत्व समाहित अछि सभ ठाम अपन माधुर्य लऽ कऽ उपस्थित अछि। सभ ठाम सामाजिक समरसताक भाव अन्तर्निहित अछि। ओएह भाव प्रस्फुटित भऽ मिथिलाक लोकसंस्कृति आइयो धरि जीवन्त अछि। ओएह भाव प्रस्फुटित भऽ मिथिलाक लोकसंस्कृति आइयो धरि जीवन्त अछि, कतेको अन्हर-बिहाड़िसँ लड़ैत आ झगड़ैत।

संक्षिप्तत: मिथिलाक लोकसंस्कृति मध्य अबैत-एहिठामक लोकगाथा, लोकगीत, लोककला, लोकशिल्प, लोकसंगीत, पाबनि-तिहार, लोकनाट्य, लोकनाच, लोकमंत्र, भाओ-भगैत-गहबरगीत, रहन-सहन, खाइन-पीअन, पेन्हब-ओरहब आदि। एहिमे जे सामाजिक समरसता देखल जाइत अछि, कतौ अन्यत्र नहि। सामाजिक समरसतामे मिथिलाक तन-जीवनक जे योगदान रहल अछि, से प्रशंसनीय अछि। किछु पर विचार अभीष्ट अछि-

सर्वप्रथम लोककथापर विचार करैत छी तऽ दखैत छी जे ई हाजिर जवाबी, लोक चातुर्य एवं ऐतिहासिक जनश्रुतिपर आधारित लोककथा सम्पूर्ण मिथिलामे भरल-पुरल अछि। एहिमे मिथिलाक इतिहास आ सामाजिक समरसताक लेखा-जोखा सुरक्षित अछि। जखन हम नानी, दादीक मुँहसँ 'मेनाक बच्चा सिलौरिया रे दूटा जामून गिरा'

सुनैत छी तऽ एहिमे समाजमे सुरक्षित हमरा नैतिक मूल्यक ज्ञान होइत अछि। जनजीवन आनन्दित एवं गौरवान्वित होइत अछि। नेना किनको हो कोनो विभेद नहि। एहि कथामे कतौ ने लिखल अछि जे बच्चा कोनो हिन्दूक छैक, आ कि मुसलमानक। ब्रह्मणक छैक कि शेखकेर। डोमक छैक कि दुसाधकेर। ई लोकवाणी मिथिलाक लोकसंस्कृति मध्य सामाजिक समरसताक एक्स-रेक काज करैत अछि।

मिथिलाक प्रसिद्ध लोककथामे धार्मिक एवं व्रतादि विषयक कथाकेँ छोड़ि लोरिक कथा, राजा सलहेसक कथा, नैका बनिजाराक कथा, कोशी, कमला, बलान नदीसँ सम्बन्धित कथा, सतभैंयाक कथा, बरहकेसी रानीक कथा आदि जतऽ मिथिलाक प्राचीन सामाजिक व्यवस्थाकेँ उकेरैत अछि ओतऽ मिथिलाक प्रसिद्ध व्यक्तित्व गोनू झासँ सम्बन्धित लोककथा मिथिलाक जनमानसकेँ व्यंग्य-विनोदक एकटा नव आयाम दैत अछि। एहिमे एक दिस जतऽ हसन-हुसनैक कथा-गाथा, आल्हा-रुदलक कथा-गाथा, बालापीरक कथा-गाथा, मीरा-साहेबक कथा-गाथासँ हम ओत-प्रोत रहैत छी तऽ दोसर दिस ओतऽ दाहा, पमरियासँ सम्बन्धित कृत्य हमर जनजीवनक सामाजिक समरसताक अद्वितीय उदाहरण दृष्टिगत होइत अछि। एहिठामक जनजीवन फगुआ सन हिन्दुक पाबनिमे मुसलमान लोकनि अपन भागीदारी प्रस्तुत करैत अछि तऽ दोसर दिस मुहर्रम, शवेबारात, इदुलफितर आदि पाबनिमे हिन्दू बालक, ललना जंगी, सिरनी, बद्धी चढ़ा अपन भागीदारी प्रस्तुत करैत सामाजिक समरसताक अमिट छाप छोड़ैत अछि। गहबर, थान, पिपरक गाछक नीचाँ सरकल गाछी, हाट-गाछी, चौक-चौराहा आदिपर मीरासाहेबक गाथा, आल्हा-रुदलक गाथाक संग धर्मराज, सलहेस, लोरिक, दीनाभद्री गाथाक पाबन करैत अछि तऽ कतोक हिन्दू 'रोजा' रखबाक ब्रत।

मिथिलामे सूर्योदय लोकगीतसँ होइत अछि तऽ सूर्यास्त सेहो। राति लोकगीतकेँ अपना छातीसँ लगौने ससरैत अछि। साँझ-भिनसर सेहो लोकगीतेक मध्य अवतरित होइत अछि। वस्तुतः लोकगीत स्वतः स्फूर्ति होइत अछि। ओहिमे मानव उल्लास मुखरित होइत अछि आ मोनक वेदना सेहो फूटि पड़ैत अछि। जन्मसद्द लऽ कऽ मृत्यु पर्यन्त मिथिलाक जन-जीवन समय आ स्थानपुरुष अपन-अपन गीत गाबि परमानन्दक प्राप्ति करैत रहैत अछि। मिथिलामे गावऽवला गीत सोझे हृदयपर चोट करैत अछि। एहिठाम 'झरनी' गीत गाबि हिन्दू लोक खूब आनन्दित होइत अछि तऽ फगुआक गीतमे मुसलमान सराबोर भऽ डंका बजा कऽ रंग-अबीर लगा-लगाकऽ, रहैत अछि।

बंगलापर दादा रोबै
अंगनामे दादी
टीका पहिरा कऽ
सेहरा पहिर कऽ
कुर्सी बैसल दुल्हा।''

ई गीत मिथिलाक मुसलमानक घरक प्रचलित विवाह गीत थिक तऽ

''हाय ! अल्लाह ! हाय ! हाय !
सैयद जैथीन लड़ऽल हाय !
के जेतै हाजीपुर के जेतै पटना
सैयद जैथीन रैनी बन लड़लऽ हाय!

मसरिया बहुतांश मुसलमानक लेल ' धर्ममंत्र' जकाँ पावन मंत्र अछि, जाहिमे मिथिलाक जन-जीवन जीबैत अछि। एहन सामाजिक समरसताक ओज मिथिलाक लोकगीतमे सर्वत्र समान रूपमे देखल जाइत अछि। 'जट-जटिन' सन गीत सभललनाकेँ 'गरा-जोड़ि' कऽ देखल जाइत अछि।

मिथिलाक लोकनाट्य भारतीय लोक नाट्य जगतमे अपन विशिष्टताक धाख जमौने अछि, जकर अपन इतिहास छैक। हिमालय आ गंगाक मध्य अवस्थित मिथिला सांस्कृतिक दृष्टिसँ बड़ उर्वर अछि। हिमालय एकर प्रेरणाक स्रोत छैक तऽ नदी एकर सांस्कृतिक उद्भावक। दोसर दिस वन-पर्वतसँ भरल, शस्य-श्यामला भूमि एकर रंगमंच। मेघक गर्जब, बिजलौकाक चमकब, बसातक प्रलयंकारी स्वरूप, कोइलीक कुहुकब, मोरक नाचब, पतझड़, वसंत, हेमंत आदि ऋतु प्राकृतिक अनंत असीम योग लोक नाट्य उद्गम एवं विकासक मूलाधार थिक। ग्राम्य जीवनक प्रमुखताक कारणेँ लोक-नाट्यमे लोकजीवनक जतेक सुन्दर समागम कयल जाइत अछि, से अन्यत्र दुर्लभ अछि। जनजीवनसँ बान्हल रहलाक कारणेँ एहि विशाल भू-भागक जन समूह लोक, नाट्यक माध्यमसँ अपन आंचलिक परम्पराकेँ अक्षुण्ण रखने अछि। 'सामा-चकेबा' मिथिलाक लोकप्रिय महिला नाट्य थिक। एहिठाम सभ जाति आ वर्गक लोक सामा खेलाइत अछि। एहि नाटकमे भाइ-बहिनक प्रेम अछि तऽ दोसर दिस चुगलपनक फल देखाओल जाइत अछि। एहिठाम एखनो सलहेसक गहबर गाम-गाममे देखबामे अबैत अछि। एहिठाम लोकसभ द्वारा नाच, नाटक आ भाओ एखनो धरि होइत अछि। एहि आयोजनमे सभ जाति आ वर्गक लोक भाग लैत अछि। एतऽ लोरिक, आल्हा-रुदल नाटकमे सभ तरहक लोकक भागीदारी सामाजिक समरूपताकेँ दर्शबैत अछि। हमरा ओहिठाम 'नसीर' आ 'बसीर' के सलहेस नाचमे अपन प्रदर्शन जन-जीवनमे स्पष्ट छाप छोड़ने अछि।

मिथिलामे छप्पन कोटि देव-दानव, भूत-पिशाच, वीर-पीर, सेवक-भगत, ओझा-धामी आदि प्रकल्पित छथि जकरा लेल सालो भरि पाबनि-तिहारक क्रम लागल रहै छैक। लोक जीवनसँ घनिष्ट रूपेँ सम्बन्ध होयबाक कारणेँ ई अपनामे ततेक घुलि-मिली गेल छैक, जे ओकरा फराक करब अत्यंत दुष्कर भऽ गेल अछि। मिथिलाक गाममे बसनिहार बाल-वृद्ध-वनिता, पुरुष-नारी, किसान-मजदूर, गरीब-धनीक, द्विज-अद्विज, सभक लेल ई पाबनि-तिहार हर्ष आ उल्लास सभ अजय स्रोत थिक। एहिमे नोत-हकार, बेउन बट्टा, पैंच-पालट, लेन-देन, सामाजिक सौहार्द्रताके सदिखन बनौने रहैत अछि। चाहे ओ दिआबाती, फगुआ, जुड़शीतल, छठि, भरदुतिया, राखी, वसंत पंचमी आदि हो अथवा शबे बरात, रमजान, इदूलफितर आर मुहर्रम। एहि पाबनि सभमे जातिक जन-जीवनक हिस्सेदारी होइत अछि। पाबनि-तिहारमे प्रयुक्त होमऽ वला सूप, कोंनिया जँ डोम जातिक लोक कलाकार हाथसँ बनल रहैत अछि तऽ दीआ, कुम्हार जातिक कलाकार हाथसँ। तेल, तेलीक हाथसँ देल गेल रहैत अछि तऽ ढोल-तासा आदि बजेबाक काज चमार जातिक लोक सभहक हाथ करैत अछि। स्पष्ट अछि जे-मिथिलांचलक जनजीवन अतिवादी नहि अपितु समन्वयवादी होइत अछि।

एहिना मिथिलाक लोककला यथा-मूंज, पथियाक सीकीक पौती, खजूरक शीतलपट्टी, धानक झट्टाक गोनरि, टकुरी ओ चरखाक प्रचलनि जोलहाक वस्त्रशिल्प, कसीदाओ बुनाइक परिपाटी, माटिक महादेवसँ लऽ कऽ माटिक

कोठी, घोड़ा बनाएब, माटिक मूर्ति ओ बासन, कनियाँ-पुतरा बनेबाक परिवाटीमे एहिठामक जनजीवनक भागीदारी प्रबल रूपेँ अछि जाहि मध्य सामाजिक समरसता परिलक्षित रहैत अछि। एहिठामक लोक संगीतमे सेहो सभ जातिक लोकक भागीदारी रहैत अछि। बँसुली, कलारनेट, ढोलक, नगाड़ा, मृदंग, डाफ, डमरू, खजूरी, सारंगी, एकतारा, सितार, वीणा, रसन-चौकी, सिंगी आदि द्वारा बजाओल जा रहल लोकसंगीत मध्य भाँट, मौलाप्यारे, बक्खो-बखिनीक संग पचनियाँ, गुदरिया आदिक संग सभ जाति-धर्मक लोक जन-जीवनमे एहिसँ सम्बद्ध अछि। गोदना, मधुबनी पेंटिंग आदिमे सेहो सामाजिक समरसता प्रचुर मात्रामे देखल जाइत अछि।

एकर अतिरिक्त मिथिलाक कतिपय लोकसंस्कृति मध्य सेहो सामाजिक समरसता देखल जाइत अछि। मुदा देश समाज आ संस्कृति आई संक्रमणकालसँ गुजरि रहल अछि। सम्पूर्ण जन-जीवन अस्त-व्यस्तताक दंश झेल रहल अछि। अत्याचार, अतिचार, बलात्कार, मार-काट चारू कात अपन पाँखि पसारि रहल अछि। एहिठामक लोक दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, मलेशिया, अरब, इराक, आदि जाकऽ अपन रहन-सहन खान-पीन, पहिरब-ओढ़ब आदि बिसरि रहल अछि। विचार संक्रमणित भऽ गेल अछि। टी.भी. सिनेमा आदिक प्रभावे पाश्चात्य सभ्यता आ संस्कृतिक आक्रमण तीव्र गतिमे बढ़ि गेल अछि। वर्तमान समाजेँ एतेक विडम्बना सहलाक बादो जतऽ एकदिस यूनान, मिस्र, रोम आ चीनक प्राचीन संस्कृति लुप्त प्रायः भऽ गेल अछि, ओत भारतीय संस्कृति सतामे कने-मने विकृति अएलाक उपरान्तो जौँ जहिनाक तहिना सुरक्षित बनौने अछि तऽ एक मूल कारण अछि एहि ओजके सुरक्षित रखबाक लेल धैर्य, शक्ति, उत्साह आ संवेदनशील मनोभावक।

शब्दार्थ

तादात्म्य = एकात्मकता, अभेद

सुच्चा = शुद्ध

गमइक = गामसँ सम्बन्धित

हृदयग्राही = बोधगम्य

अल्पशिक्षित = कम शिक्षित

अद्यपर्यन्त = आइधरि

माधुर्य = मिठास

हाजिर जबाबी = तुरत जवाब देनिहार

ललना = किशोरी

वेदना = कष्ट

उर्वर = उपजाऊ

अन्यत्र = दोसर ठाम

दंश = क्लेश

कोटि = करोड़

प्रश्न ओ अभ्यास

लघूत्तरीय

1. 'जन' शब्दक की अर्थ होइत अछि?
2. 'संस्कृति' शब्दक अर्थ स्पष्ट करू?
3. 'लोकसंस्कृति' शब्दक वर्णन करू?

दीर्घोत्तरीय

1. मिथिलाक लोक संस्कृतिमे सामाजिक समरसता पूर्णत: व्याप्त अछि, वर्णन करू।
2. सामाजिक समरसतामे मिथिलाक जन-जीवनक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। प्रस्तुत लेखक द्वारा एकरा प्रमाणित करू।
3. मिथिलाक लोक-नाट्यमे लोक-जीवनक सुन्दर समागम भेल अछि। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करू।
4. मिथिलाक प्रमुख पावनि-तिहारक नाम लिखू।

भाषा अध्ययन

1. एहि पाठमे उल्लिखित व्यक्तिवाचक संज्ञाकेँ बीछि कऽ लिखू।
2. मैथिलीमे बहुतो सहचर शब्द होइत अछि जे सर्वदा संग-संग युग्म रूपमे प्रयुक्त होइत अछि। जेना एहि निबन्धमे प्रयुक्त अछि-सगा-सम्बन्धी, जन-जीवन, एहिना दस गोट सहचर शब्द ताकि वाक्यमे प्रयोग करू।
3. निम्नांकित शब्दकेँ अपन वाक्यमे प्रयुक्त करू :-

   ग्रामीण , लोककथा, लोकगीत, पाबनि, ललना।

योग्यता विस्तार

1. अपन दादी, नानी वा कोनो बुजुर्ग महिलासँ 'सामा-चकेवा' कथाकेँ सूनि अपन अभ्यास पुस्तिकामे लिखू।
2. अहाँ अपना घरमे दीया-बाती कोना मनबै छी? सविस्तारसँ लिखू।
3. फगुआ पर निबन्ध लिखू।